राजनीति विज्ञान

बी.ए.2 ईयर के छात्रों के लिए
प्रथम प्रश्न पत्र : पाश्चात्य राजनीतिक चिंतक

“प्लेटो की शिक्षा योजना”

चरैवेति चरैवेति

महात्मा ज्योतिबा फुले
रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

प्रस्तुतकर्ता –
डॉ. नरेश कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान
राजकीय महाविद्यालय भोजपुर, मुरादाबाद

घोषणा पत्र

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उधेशयों के लिए है। आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देशय के लिए इसका उपयोग पूर्णत: प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करंगे और इसका व्यतिगत ज्ञान कि उन्नति के लिए ही प्रयोग करेंगे। इस ए-कंटेन्ट में जो जानकारी दी गई है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

२. शिक्षा की योजना

प्लेटो की 'Republic' केवल सरकार के सम्बन्ध में लिखी गई पुस्तक नहीं है, जैसा कि रूसो कहता है यह शिक्षाशास्त्र का प्रबंध ग्रंथ है । उसके सारे दर्शन का सार प्राचीन यूनानी समाज में (राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक के साथ-साथ नैतिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक) सुधार लाना था ।

रिपब्लिक का उद्देश्य न्याय का पता लगाना और तत्पश्चात् एक आदर्श राज्य में उसकी स्थापना करना था । उसकी शिक्षा नीति इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए थी । प्लेटो के लिए सामाजिक शिक्षा सामाजिक न्याय का एक साधन थी । शिक्षा, जैसा कि क्लाउस्टीट हमें बताता है, नैतिक सुधारों के लिए एक साधन थी ।

प्लेटो की शिक्षा का सिद्धांत बुराई को उसके उद्गम पर ही छूने का प्रयास है । यह एक मानसिक रोग का एक मानसिक औषधि से इलाज करने का प्रयास है ।

प्लेटो की शिक्षा का सिद्धांत उसके राजनीतिक सिद्धांत के लिए भी महत्वपूर्ण है । अपने गुरु सुकरात का अनुसरण करते हुए प्लेटो का इस सिद्धांत में विश्वास था कि सदगुण ही ज्ञान है । (Virtue is Knowledge) और लोगों को सद्गुणी बनाने के लिए उसने शिक्षा को एक बहुत शक्तिशाली साधन बनाया ।

प्लेटो कहता है कि शिक्षा समाज में सभी वर्गों के लिए आवश्यक थी, लेकिन यह विशेष रूप से उनके लिए जरूरी थी जो लोगों को शासित करते हैं ।

प्लेटो की शिक्षा की योजना पर एथेंस और स्पार्टा दोनों राज्यों का प्रभाव था । सेबाइन ने लिखा है कि 'इसकी स्पार्टा जैसी वास्तविक विशिष्टता थी, शिक्षा का केवल नागरिक संबंधी प्रशिक्षण को समर्पित होना किंतु इसकी विषय-वस्तु बिल्कुल एथेंस जैसी थी और इसका उद्देश्य प्रमुख रूप से नैतिक और बौद्धिक गुणों का विकास करना था ।

प्रारंभिक शिक्षा का पाठ्यक्रम दो भागों में विभाजित किया गया था- शरीर के प्रशिक्षण के लिए व्यायाम संबंधी और मस्तिष्क के प्रशिक्षण के लिए संगीत । प्रारंभिक शिक्षा समाज के सभी तीनों वर्गों को दी जानी थी किंतु 20 वर्ष की अवस्था के बाद जिन लोगों का उच्च शिक्षा के लिए चयन होता था वे वह लोग थे जिन्हें संरक्षक वर्ग में 20 से 35 वर्ष की आयु के बीच उच्च पदों पर कार्य करना था । संरक्षक वर्ग के अंतर्गत सहायक तथा शासक दोनों आते थे ।

इन दोनों वर्गों को व्यायाम तथा संगीत संबंधी शिक्षा अधिक दी जाती थी । व्यायाम सम्बन्धी अधिक शिक्षा सहायक वर्ग को दी जाती थी तथा संगीत सम्बन्धी अधिक शिक्षा शासक वर्ग को । इन दोनों वर्गों को उच्च शिक्षा व्यावसायिक उद्देश्य से दी जाती थी और उनकी पाठ्य-सामग्री के लिए प्लेटो ने केवल वैज्ञानिक अध्ययन-गणित, खगोल विज्ञान और तर्कशास्त्र को ही चुना था ।

दोनों वर्गों द्वारा अपना-अपना काम शुरू करने से पहले, प्लेटो ने उनके लिए लगभग 50 वर्ष की आयु तक के लिए और शिक्षा दिए जाने का सुझाव दिया जो अधिकतम प्रायोगिक शिखा थी ।

निष्कर्षत: प्लेटो की शिक्षा की योजना में निम्नलिखित विशेषताएँ थी:

1. उसकी शिक्षा की योजना संरक्षक वर्ग के लिए थी । उसने उत्पादक वर्ग पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया था ।
2. उसकी पूरी शिक्षा योजना राज्य द्वारा नियंत्रित थी तथा इसका उद्देश्य मनुष्य का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और नैतिक विकास था ।
3. यह तीन चरणों को मिलाकर बनी थी- प्राथमिक 6 से 20 वर्ष की आयु में, उच्च 20 से 35 वर्ष की आयु में तथा प्रायोगिक शिक्षा 35 से 50 वर्ष की आयु तक ।
4. इसका उद्देश्य शासकों को प्रशासनिक राज-कौशल सिखाना, सैनिकों को सैन्य-कौशल सिखाना तथा उत्पादकों को भौतिक वस्तुओं के उत्पादन-कौशल सिखाना था और अन्ततः इसके द्वारा व्यक्तिगत और सामाजिक आवश्यकताओं में संतुलन लाने का प्रयास किया गया ।

प्लेटो की शिक्षा योजना गैर-लोकतांत्रिक तरीके से बनाई गई थी क्योंकि इसमें उत्पादक वर्ग को अनदेखा किया गया था । यह अपने स्वरूप में सीमित थी तथा अपने विस्तार में प्रतिबंधात्मक थी क्योंकि इसमें गणित पर साहित्य की अपेक्षा अधिक बल दिया गया था ।

यह एक गैर-व्यक्तिवादी योजना थी क्योंकि इसमें व्यक्ति की चिंतन प्रक्रिया तथा उसकी स्वायत्तता को बाधित किया गया था । यह बहुत ही गूढ़ तथा अमूर्त और इतनी अधिक सैद्धांतिक थी कि इसके कारण यह प्रशासनिक बारीकियों से भी दूर हो गई ।

संदर्भ / ग्रंथ

1. https://www.hindilibraryindia.com/political-thinkers/plato/%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B2%E0%A5%87%E0%A4%9F%E0%A5%8B-%E0%A4%94%E0%A4%B0-%E0%A4%89%E0%A4%A8%E0%A4%95%E0%A5%80-%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A5%80%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%95-%E0%A4%B5/15253#:~:text=%E0%A4%97%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%80%E0%A4%95%20%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A5%80%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%95%20%E0%A4%9A%E0%A4%BF%E0%A4%82%E0%A4%A4%E0%A4%A8%20%E0%A4%95%E0%A5%87%20%E0%A4%87%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B8,%E0%A4%95%E0%A5%87%20%E0%A4%8F%E0%A4%95%20%E0%A4%AE%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%A8%20%E0%A4%AA%E0%A5%81%E0%A4%9C%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%80%20%E0%A4%A5%E0%A5%87%20%E0%A5%A4&text=%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B2%E0%A5%87%E0%A4%9F%E0%A5%8B%20%E0%A4%A8%E0%A5%87%20%E0%A4%86%E0%A4%A6%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%B6%20%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A5%8D%E0%A4%AF%20%E0%A4%95%E0%A4%BE,%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%A5%E0%A4%BE%E0%A4%8F%E0%A4%82%20%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%AF%20%E0%A4%B8%E0%A5%87%20%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A5%81%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%A3%E0%A4%BF%E0%A4%A4%20%E0%A4%B9%E0%A5%8B%20%E0%A5%A4